अबोले के विरुद्ध

(जयप्रकाश मानस की कविताएँ)

जयप्रकाश मानस

अबोले के विरुद्ध

शिल्पायन
दिल्ली-110032

ISBN 978-81-89918-92-7

© जयप्रकाश मानस

प्रकाशक
शिल्पायन
10295, लेन नं. 1, वैस्ट गोरखपार्क,
शाहदरा, दिल्ली-110032
दूरभाष : 011-22326078

मूल्य
175.00

संस्करण
2010

आवरण-सज्जा
उमेश शर्मा

शब्द-संयोजन
उमेश लेजर प्रिंट्स, दिल्ली

मुद्रक
रुचिका प्रिण्टर्स, दिल्ली-32

ABOLE KE VIRUDHA (POEMS)
by Jaiprakash Manas

कल्पना को

क्रम

उपस्थिति
फिर से
माँ की रसोई
अकाल में गाँव : तीन चित्र
कुछ झूठ बोलना सीखो कविता!
अभी भी
चिट्ठी : दो कविताएँ
खौफ
छाँव-निवासी
कुछ छोटी कविताएँ
वनवासी गमकता रहे
नदी
नींद से छूटते ही चला जाऊँगा
जो हुआ नहीं पृथ्वी में
कैसोवरी, हमारे द्वीप में आना मत
इधर बहुत दिन हुए
एक अदद घर
ठंडे लोग
जीत
एक जरूरी प्रार्थना
बचे रहेंगे सबसे अच्छे
खतरा
जाने से पहले
अशेष
वनदेवता से पूछ लें
जनहित
बहुत कुछ है अपनी जगह
रहस्य
लाख दुश्मनों वाली दुनिया के बावजूद
कुछ बचे या न बचे
डैने
अब जो दिन आएगा
खुशगवार मौसम
गोली
वे जा रहे हैं
कोई नहीं है बैठे-ठाले
संबंध
रहा जा सकता है वहाँ भी
मनोकामना
तो
खाली समय
देखते ही देखते एक हत्या हो जाती है
तोते को किसने किया विवश
यह तो बूझें
तालिबान
लोक
कमरे से कुछ भी नहीं दिखता
प्यार में
तरकीब
जिन्होंने नहीं लिखा कभी कोई प्रेमपत्र
प्रेमपत्र
अन्न-पूजा
लोग जरूर थे

आप किधर जाना चाहेंगे?
श्रद्धांजलि
जो आत्महत्या नहीं करते
कुछ लोग सुसाइडल नोट नहीं लिख छोड़ते
सपना
कविता होगी तो
बस्तर : कुछ कविताएँ
जब कभी होगा जिक्र मेरा
सबसे अच्छी परजा
लोग मिलते गए काफिला बढ़ता गया
मनौती
वजन
अभिसार
कहीं कुछ हो गया है
निकल आ
सफर में
कविता, पत्थर और पानी
कुदाल का गीत
गाना ही गाते रहेंगे
झाड़ू
गिरूँगा तो उठूँगा
आम आदमी का सामान्य ज्ञान
निहायत छोटा आदमी
जहाँ जाता नहीं कोई
बचे रहेंगे

उपस्थिति

व्याकरणाचार्यों से दीक्षा लेकर नहीं
कोशकारों के चेले बनकर भी नहीं
इतिहास से भीख माँगकर तो कतई नहीं

नए शब्दों के लिए
नापनी होंगी दिशाएँ
फाँकने पड़ेंगे धूल
सहने पड़ेंगे शूल

अभी
निहायत अपरिचित, उदास, एकाकी
शब्दों की उपस्थिति
नहीं हुई है कविता में

अभी पराजय की घोषणा न की जाए
मुठभेड़ों की आवाजें आ ही रही हैं छन-छनकर
क्या पता किसी के पास बची हो एकाध गोली
क्या पता आखिरी गोली से टूट जाए कारागृह का ताला
और फिर बंदीगण

सूरज नहीं आ सकता
हर किसी के आँगन में सुबह होते ही
किरणें बराबर आती रहें
पूरब की ओर हों आपके घर के दरवाजे
खिड़कियाँ

माँओं की गोद में आना बाकी है अंतिम बच्चा
चिड़ियों को याद है अभी भी गीत की एक कड़ी
लड़ाकुओं ने चलाया नहीं है अंतिम अस्त्र
कुछ सपने अभी भी कुँआरे हैं
हवाओं में भटक रहे हैं
फिर ऐसे में कैसे हो सकती है
दैत्य की विजय

फिर से

फिर से
विश्वासघात कर रहा है बादल
जलकुकड़ा सूरज जल रहा है
हवा फैला रही है फिर से जहर
जमीन दोस्ती कर रही है दीमकों के साथ

फिर से
परदेसी रवाना कर रहे हैं
खतरनाक टिड्डों की फौज
फिर से छुट्टा छोड़े जा रहे हैं
डाकू-ढोर-डंगर

अगर कुछ नहीं हो रहा है फिर से
तो सिर्फ
लहलहाते हुए को बचा लेने की कोशिश
भाषा में किसने घोल दिया है इतना धतूरा

माँ की रसोई

सारे पड़ोस को पता चल जाता है
कौन-सी सब्जी पक रही
यहाँ आकर
हम भाइयों की भूख एकाएक जाग उठती
गोल घेरे में बैठ जाते पिता और दादा भी
बिना मुँह फुलाए कि उन्हें अपने बेटों से कुछ शिकायत
है

खाना परोसती हुई बहनों से दादा कहते
ससुराल में
सभी को बरोबर खिलाना
वरना लक्ष्मी नाराज हो जाएँगी
माँ की रसोई ही अन्नपूर्णा का ठीहा है बेटी
इसे संभाल कर रखना

मुझे नहीं पता बहनें कैसे संभालती होंगी रसोई
पर माँ से संभलती है हमारी रसोई
और रसोई से हमारा घर

अकाल में गाँव : तीन चित्र

एक

डबडबा उठी हैं सपनों की आँखें
विधवा-सी
पैंजनी/ करधनी/ चूड़ियों की मन्नतें
मुँह लुकाए
कहीं अँधेरे में बैठा है
त्योहार वाला दिन
बाँझ की तरह
ससुराल से मायके की पैडगरी के बीच
लापता है गाड़ीवाले का गीत
घंटियों की ठुन-ठुन
चित्त पड़ा है किसान
छिन्न-भिन्न मन
इधर बहुत दिन हुए
दादी की कोठी में
नहीं महकता दुबराज वाला खेत
उदासी में
डूबा हुआ है गाँव

दो

इस साल फिर
बिटिया की पठौनी
पुरखौती जमीन की
कागज-पतर नहीं लौटेगी साहूकार की तिजोरी से
बूढ़ी माँ की अस्थियाँ
त्रिवेणी नहीं देख पाएँगी
रातें काटेंगी
बिच्छू की तरह
दिन में डराएँगे
आनेवाले दिनों के प्रेत
सपनों में उतरेगा
रोज एक काला दैत्य
मुखौटे बदल-बदल
कबूतर देहरी छोड़कर
चले जाएँगे कहीं और
समूचाघर
पता नहीं
किस अंधे शहर की गुफा में
और गाँव
किसी ठूँठ के आसपास
पसरा नजर आता
मरियल कुत्ते की तरह
भौंकता

तीन

मनचला दुकानदार
किसान की बेटियों से करता है
चुहलबाजी

षड़यंत्र छलक रहा है
बाजार से
गोदाम तक
ब्याजखोर रक्सा की आँखों में
नाच रही हैं
पुरखों के जेवरातों की चमक
जलतांडव की बहुरंगी तस्वीरें उतारकर
आत्ममुग्ध हैं कुछ सूचनाजीवी
डुबान क्षेत्र के ऊपर
किसी बड़ी मछली की फिराक में
उड़ रहे हैं बगुले
शहर के मन में
जा बैठा है सियार
गाँव
सब कुछ झेलने के लिए
फिर से है तैयार

कुछ झूठ बोलना सीखो कविता!

कविते!
कुछ फरेब करना सिखाओ
कुछ चुप रहना
वरना तुम्हारे कदमों पर चलनेवाला कवि
मार दिया जाएगा खामखां
महत्वपूर्ण यह भी नहीं कि
तुम उसे जीवन देती हो

अमरत्व भी
पर मरने के बाद

कविता
फिलहाल उसे
तुम जरा-सा झूठ दे दो
ताकि किसी तरह वह बच जाए

जब बचा ही नहीं रहेगा कवि
तो कविता के साथ कौन आना पसंद करेगा!

अभी भी

गूँज रही है चिकारे की लोकधुन
पेड़ के आसपास अभी भी
अभी भी
छाँव बाकी है
बाकी है
जंगली जड़ी-बूटियों की महक

चूल्हे के तीन ढेलों के ऊपर
खदबदा रहा है चावल-आलू अभी भी
पतरी दोना अभी भी दे रहे हैं गवाही
कितने भूखे थे वे सचमुच

धमाचौकड़ी मचा रहा है बंदर अभी भी
पुन्नी का चंदा अभी भी टटोल रहा है
यहीं कहीं खिलखिलाहट
मेरा मन निकले भी तो कैसे
कहीं से भी तो लगता नहीं
उठा लिया है देवारों ने डेरा

चिट्ठी : दो कविताएँ

एक

कविता में महक उठता बसंत
पुतलियों से झाँकने लगता
सुर्ख सूरज
पंखुरियों में बिखर गया जीवन
हत्या से लौटा हुआ मन
तलाशता वनांचल का
आदिम लोकराग
क्यों करते पृथ्वी में स्वर्ग की तलाश
मिल गई होती काश
उनकी एकाध चिट्ठी

दो

देखते ही देखते
खतरा मँडराने लगा
देखते ही देखते
अहिंसक
एक-एक कर

तब्दील हो गए जानवरों में
लगा जैसे समय
आग का पर्वत हो
लगा जैसे
भोला-भाला मन देकर
ईश्वर ने किया हो सबसे बड़ा पाप
क्यों दीख पड़ी
सुनहरे शब्दों की चिट्ठी
लड़की की नई किताब में

खौफ

जाने-पहचाने पेड़ से
फल के बजाय टपक पड़ता है बम
काक-भगोड़ा राक्षस से कहीं ज्यादा खतरनाक

अपना ही साया पीछा करता दीखता
किसी पागल हत्यारे की तरह
नर्म सपनों को रौंद-रौंद जाती हैं कुशंकाएँ
वालहैंगिंग की बिल्ली तब्दील होने लगती है बाघ में

इसके बावजूद
दूर-दूर तक नहीं होता कोई शत्रु
वही आदमी मरने लगता है
जब खौफ समा जाता है मन में

छाँव–निवासी

धूप की मंशाएँ भाँपकर
इधर-उधर, आगे-पीछे, दाएँ-बाएँ
जगह बदलते रहते
दरअसल
पेड़ से उन्हें कोई लगाव नहीं होता

कुछ छोटी कविताएँ

अंततः

बाहर से लहूलुहान
आया घर
मार डाला गया
अंततः

जुगनू

जब सूरज मुँह ढँककर सो जाता है
जब चाँद शर्म से दुबक जाता है
जब अनगिनत सितारे एक-एक कर हो जाते हैं गायब
जागते रहते हैं सिर्फ जुगनू
सूरज चाँद सितारे भले ही न बना जा सके
जुगनू तो बना ही जा सकता है

पहाड़

आँधी-तूफान
वर्षा-शीत-घाम

हर हाल में
सिर्फ वही रहे
अडिग अविचल

शिखर पर

लाँघनी पड़ती है
पगडंडी
बगैर लहूलुहान पाँवों से
अकेले ही
खूंखार जंगल
दुर्गम पहाड़ियाँ
अँधेरी गुफाएँ
प्राणघाती घाटियाँ

यूँ ही कोई
नहीं पहुँच जाता शिखर पर

चयन

दोनों तरफ
मिल सकता है सुख

इधर अकेले में
जिन्हें नहीं करनी पड़ती कोई लड़ाई
उधर लड़ाई में
शामिल होना पड़ता है
सबके साथ
भीतर-ही-भीतर

रास्ते का चुनाव
तुम्हें करना है

वनवासी गमकता रहे

संस्कारवान जब-जब
बैठा रहता है निस्पृह
निश्चिंत अपने कमरे में
तब-तब वह
कोलाहल उधेड़बुन में धँस जाता है
बंद कमरे के भीत को लेकर

सभ्यजन जब-जब
दृष्टि को सिरहाना बनाकर
सोता रहता है
अपने कमरे में
तब-तब उसकी नजरें रेंगती
फिसलती रहती हैं
अँधेरे की आड़ में
दूसरों के कमरे में
विचारशील जब-जब
गाँज-गाँज कर धार-धार अस्त्रों को भरता
अपने कमरे में
तब-तब पीछे छूटा समय

बना लेता है बंदी
उसके अपने कमरे में ही

आदिवासी नहीं जानता
सभ्यता को पढ़ने की चतुर भाषा
विचारशीलता के बिम्ब भी
होते नहीं उसके पास
फिर भी चाहता हूँ ताउम्र
आदिवासी गमगता रहे
कोठी में धान की मानिंद
गाँव में तीज-तिहार की मानिंद
पोखर में पनिहारिनों की हँसी की मानिंद
वन में चार-चिरौंजी की मानिंद

मेरी कविता में
अपरिहार्यतः
अनिवार्यतः

नदी

नदी
हमारे सपनों में गुनगुनाती है अंतहीन लोकगीत
गीतों में गमकते हैं
कछारी माटी वाले हमारे सपने
पहुँचाती है पुरखों तक
अंजुरी भर कुशलक्षेम
दोने भर रोशनी

हमारी बहू-बेटियों की मनौतियों की
निर्मल चिट्ठी के लिए
जनम-जनम बनती है डाकिया
पूछती फिरती है सही-सही पता
बाधाओं के पहाड़ लांघकर
नदी अन्न के भीतर पैठकर पहुँचती है
हमारे जीवन में
अथाह ऊर्जा के साथ

सभी के काम पर गुम हो जाने के बाद भी
बच्चों के आसपास रहती है कोई

तो
वह नदी ही है माँ की तरह
हमारे बच्चे अनाथ हुए बिना
रचते रहेंगे दोनों तटों पर गाँव
गाँव की दुनिया में मेले
जब तक उमड़ती रहेगी नदी
उनमें सतत

नींद से छूटते ही चला जाऊँगा

नींद से छूटते ही चला जाऊँगा
मुस्कराहट से बेखबर
ढेर सारी विपत्तियों
तमाम ऊहापोहों
समूचे बेगानेपन के
भँवरजाल से फँसे
भोर से पहले चिड़ियों की प्रभाती से कोसों दूर खड़े
उन सभी अपरिचितों के बिल्कुल करीब
जो मुझसे भी उतने ही अपरिचित हैं
जानना चाहूँगा उतना
जिसके बाद जानने को शेष न रहे रंचमात्र मुझसे
जैसी नदी
जैसे पहाड़
जैसी छाँह
जैसी आग
जैसे शब्द
जैसी भाषा
जैसी कविता
जैसे जीवन राग

नहीं बनाया जा सकता दुनिया को बेहतर
सिर्फ इंद्रधनुषी सपने रचते-रचते
सीधे चला जाऊँगा नींद से बचते-बचाते

जो हुआ नहीं पृथ्वी में

जो हुआ नहीं पृथ्वी में

बहुत कुछ होता रहा पृथ्वी में इन दिनों
अभी से कुछ-कुछ हो ऐसा
लौट चले उन सभी को
याद करते रहें
निहायत जरूरी दिनचर्या की तरह
जो सब कुछ सौंप कर चुपके से चले गए
हमारे बीच से कोई
जब भी बन जाए पोखर ताल झील नदी या समुद्र
तो भी वह बिना प्रतीक्षा
बहता चला जाए
हममें से कुछ प्यासों के पास
हाथी के दाँत जो हों खाने के
हों वही दिखाने के
छोटी-मोटी कमजोरियों के साथ
संभाल ले पूरे सौ पैसे के सौ पैसे
मित्र की एक भी अच्छाई हो तो
गुनगुनाते रहें-गुनगुनाते रहें

जैसे प्रेमपत्र
हर भाषा में साफ-साफ देखी जा सके
पृथ्वी की आयु निरंतर बढ़ते रहने की अभिलाषा
ऐसा ही कुछ-कुछ कविता में

कैसोवरी*, हमारे द्वीप में आना मत

कैसोवरी
हमारे द्वीप में मत आना
धूप तुम्हें रुचता नहीं
न ही पसंद मनुष्य का साथ
अप्रतिम सौंदर्य स्वामिनी
होने के बावजूद भी तुमने
छुपा लिया है छुरा पंजे में
जैसे विषकन्या

कैसोवरी
हम चिड़िया होकर भी शामिल है
मनुष्य की कविता में
देह में हीमोग्लोबिन की तरह
वृक्ष में क्लोरोफिल की तरह
नदी में बहते जल की तरह
खेत में अन्न की तरह

* ऑस्ट्रेलिया और गुएना में पाई जानेवाली बेहद सुंदर किन्तु खतरनाक चिड़िया, जिसे मनुष्य की हत्या करने में संकोच नहीं होता।

कैसोवरी हम लामबंद हैं
खेलते-कूदते नए बच्चों से आबाद द्वीप में
किसी भी आक्रमण के लिए
भूल कर भी आना मत
हमारे द्वीप में

इधर बहुत दिन हुए

इधर बहुत दिन हुए
पगडंडियों में चला नहीं
नीम महुआ चिरौंजी जैसे कुछ शब्द
भेजे नहीं लिफाफे में
महक कहाँ पाया अपनी ही क्यारी में
सुलगा नहीं सका आग
ठूँठ और तूफान में उखड़े दरख्तों की पीड़ा
पढ़ी भी नहीं
सच की धूप से भागता रहा
नए जमाने के पढ़े-लिखे छोकरों की तरह

रीढ़ की हड्डी को तानकर
रख पाया नहीं कभी
आत्महंता प्रश्नों को टालता रहा हर बार
एक भी बार
न चीखा न चिल्लाया
जैसे रहा हो कहीं रेहन में
तारीखों को बदलने की हरकत भी एक नहीं
सपने तो जैसे भूल गया देखना

किसी खूँटे से बँधे ढोर की तरह
एक ही परिधि के भीतर
लील रहा है घास

इधर बहुत दिन हुए
उसे मरे हुए

एक अदद घर

जब
माँ
नींव की तरह बिछ जाती है
पिता
तने रहते हैं हरदम छत बनकर
भाई सभी
उठा लेते हैं स्तम्भों की मानिंद
बहन
हवा और अंजोर बटोर लेती है जैसे झरोखा
बहुएँ
मौसमी आघात से बचाने तब्दील हो जाती हैं दीवाल में
तब
नई पीढ़ी के बच्चे
खिलखिला उठते हैं आँगन-सा
आँगन में खिले किसी बारहमासी फूल-सा
तभी गमक-गमक उठता है
एक अदद घर
समूचे पड़ोस में
सारी गलियों में
सारे गाँव में
पूरी पृथ्वी में

ठंडे लोग

जो नहीं उठाते जोखिम
जो खड़े नहीं होते तनकर
जो कह नहीं पाते बेलाग बात
जो नहीं बचा पाते धूप-छाँह
यदि तटस्थता यही है
तो सर्वाधिक खतरा
तटस्थ लोगों से है

तटस्थ उपाय नहीं ढूँढते
नहीं करते निर्णय
न ही करते कोई विचार

उपाय, निर्णय या विचार
इनके बस का नहीं
ऐसे ही शून्यकाल में
तटस्थ हो जाते हैं कितने निर्मम
कितने दुर्दम

दीखते हैं कितने खतरनाक

खुद को शरीफ बनाए रखने में
पृथ्वी को ज्यादा दिनों तक
सुरक्षित नहीं रखा जा सकता

जीत

पतंग के कटने से पहले ही
लूटी जा चुकी धागा-चकरी
हार गया हूँ आज
जो कभी न हारा था
लेकिन
मन तो मन है
धागा-चकरी सा घूम रहा
एक महीन तागा अंतहीन
सरकता ही जाता है
नीलिमा में
एक टुकड़ा चटक लाल
कभी नीचे कभी ऊपर
कभी गोल-गोल चक्कर में/ ऐंचता-खेंचता
उड़ता ही रहता है

जीत और किसे कहते हैं
कि मन उड़ता ही रहे
बिना धागा-चकरी के
बिन धागा-चकरी के

एक जरूरी प्रार्थना

मौत से पहले एक बार जरूर
बीज देख सके
भरा-पूरा वृक्ष
डगाल पर 'दहीमाकड़' खेलते बच्चे
सबसे ऊपर फुनगी पर रचे घोंसला
घोंसले में अंडे सेती चिड़िया
ठंडी छाँह में सुस्ताते
बासी-पेज पीते चरवाहे
बाबा से सीखी बाँसुरी की पुरानी धुनें
मीठी हवा का सरसराकर गुजरना
इन सबके अलावा
सब कुछ में
एक पुष्ट बीज का सपना
देख सके मौत से पहले बीज
सदियों से सँजोया सपना

बचे रहेंगे सबसे अच्छे

अच्छे मनुष्य बचे रहेंगे
उनके हिस्से की दुनिया से
चले जाने के बाद भी
लोककथाओं की असमाप्त दुनिया के
राजकुमार की तरह

बहुत अच्छे मनुष्य बचे रहेंगे
उनके हिस्से की दुनिया से
चले जाने के बाद भी
हवा-आग-पानी की तरह
अपनी दुनिया के आसपास की दुनिया में

सबसे अच्छे मनुष्य बचे रहेंगे
उनके हिस्से की दुनिया से
चले जाने के बाद भी
खुशबू की तरह
समूची दुनिया को छतनार
करते हुए गुलाब की तरह
खुशबू जो आग-हवा-पानी है

खतरा

कोई खतरा नहीं
जंगल भीतर

हरीतिमा के बीच यदि पगडंडी
गुम हो गई
तो भी कोई बात नहीं

भटकने के बाद भी
एक ही दिशा में चलते रहना
कोई खतरा नहीं

कोई खतरा नहीं
माँद से निकलते
हिंसक पशुओं से

खतरा यदि कहीं है तो
मन में घात लगाए बैठे
घुसपैठिये से
भय से

जाने से पहले

डेरा उसाल अनदेखे ठिकाने के लिए
जाने से पहले समेटना है
ठिन ठिनिन ठिन घंटियों के बोल पर
झूमते गाते पेड़
लहलहाते पेड़
मरकत द्वीप-जैसे डोंगरी के
आदिवासी पेड़

समुद्री छाँव में घन-सघन वृक्षों की
सुस्ता रहे थके-मांदे अजनबी कुछ लोग
कुछ मीठी नींद में खर्राटे भर रहे
बह रहे सपने अलस पलकों में
कि उसमें जुड़ रहे कुछ लोग

रोचक लोग,
रोचक बातचीत,
जनकथाएँ
रोचक आस्था-विश्वास
इतनी सारी चीजें छोड़ जानी हैं

कुछ ज्यादा ही तादाद में
जाने से पहले

अशेष

आँधी-तूफान उठा
आया
आकर चला गया
सब कुछ उखड़ने-टूटने के बाद भी
बचा रह गया
थिर होने की कोशिश में
काँपता हुआ एक पेड़
कहने को
कहने को तो
बची रह गई
पेड़ पर एक भयभीत चिड़िया भी
कोई गम नहीं शिकवा भी नहीं
गीत सारे-के सारे
बचे रह गए

वनदेवता से पूछ लें

घर लौटते थके-माँदे पैरों पर डंक मार रहे हैं बिच्छू
कुछ डस लिए गए साँपों से
पिछले दरवाजे के पास चुपके से जा छुपा लकड़बग्घा
बाजों ने अपने डैने फड़फड़ाने शुरू कर दिए हैं
कोयल के सारे अंडे कौओं के कब्जे में
कबूतर की हत्या की साजिश रच रही है बिल्ली
आप में से जिस-किसी सज्जन को
मिल जाएँ वनदेवता तो
उनसे पूछना जरूर
कैसे रह लेते हैं इनके बीच

जनहित

कोई
सड़क के बीचों-बीच
पसर गया है
खून से तर-बतर
समय का एक कत्थई धब्बा होने से पहले
आप जान गए पहचान गए
हाँ वही आततायी
क्या करेंगे आखिरकार आप
डॉक्टर के पास उठा ले चलेंगे
या फिर थाने

कहना मुझे सिर्फ यही है
बुद्धिमानी हर हमेशा
ठीक नहीं
जनहित के लिए

बहुत कुछ है अपनी जगह

समय अभी शेष है
रास्ते भी यहीं कहीं
भूले नहीं हैं पखेरू उड़ान
ठूंठ हुए पेड़ में हरेपन की सम्भावना भी
नमक कहाँ कम हुआ पसीने में
नहीं दीखती हुई को देख सकती हैं आँखें
राख के नीचे दबी है आग
बहुत कुछ नहीं होते हुए भी
है बहुत कुछ अपनी जगह

फिलहाल
मैं छोड़ नहीं रहा दुनिया
गहरे पैठ जाना चाहता हूँ
जीवन में

रहस्य

जैसा था जितना था
जिया मुकम्मल
कल के गणित में खपाया नहीं सिर
गुम्बदों मीनारों की ओर
निहारने की कोशिश भी नहीं
सीना तानकर झेले सारे प्रश्नों के तीर
चमकता रहा उसकी देह का नमक
दिन भर
महका जितना महक सकता है
एक साबुत फूल दिनभर
गाया उतने ही अंतरे
जितना आम पकने के मौसम में कोयल

रहस्य
मनमाफिक नींद का
नींद में शीतल सपनों का
और कुछ भी नहीं था

लाख दुश्मनों वाली दुनिया के बावजूद

कुछ हो न हो
मेरे हिस्से की दुनिया में
रहूँ दुनिया के हिस्से में
सोलह आने न सही
लेकिन दुनिया की तरह

विवशताएँ हों
ताप बढ़ाने के लिए
सकेले गए गीले जलावन की तरह
सफलताएँ भी ऐसी
कि न हो औरों की विफलताएँ जिनमें
थोड़ी-सी नींद
नींद में निटोरती आँखें
ढोर-डंगरों से बचाने लहलहाते खेतों से
सभी दिशाओं से
उफान मारती नदी हों
पर नाव भी तो आसपास एकाध

कांटे चाहे जितने हों

पैरों के नाप पर कोई मंजिल भी तो हो
छकने के लिए छप्पन-भोग
तो अकाल में
कनकी पेज से भी संतोष

जितनी अठखेलियाँ हों इधर
लापरवाही के माने
कम्प्यूटर, मोबाइल, कार पोर्च वाली
इमारत न सही

हों जरूर कार्तिक-स्नान के दिनों में
रात को भिगोए हुए फूल
देवता के लिए
चुकते हुए शब्दों के लिए
हों संदर्भ कोई नवीन
औषधि की तरह
भले ही शब्द हों निढाल
मंत्र हों सिद्ध सभी, हो जाएँ भोथरे
निरपराधों को विद्ध करने के पहले

सूरज पुराना
नक्षत्र-ग्रह-तारे
सभी अपनी जगह
लेकिन हर दूसरे दिन
कुछ ज्यादा मोहक
कुछ अधिक अधिक लुभावने
कुछ अधिक प्रेमातुर लगें
कभी घृणा के लिए अवकाश भी तो हो
प्रेम में आकंठ डूबने के लिए
मन में उपान की शर्तों पर

कुछ घात लगाएँ दुश्मन
मीठे बोल के खतरनाक पड़ोसी
कहीं से आएँ तो सही यकायक
बुरे वक्त में दोस्त कोई देवदूत की तरह

कुहासे, धुंध, तुषारापात के
बीचोंबीच कोई चाँद भी हो तो
किरण बिखेरने के लिए
मेरे हिस्से की दुनिया में

कुछ बचे या न बचे

संभाल कर रखना होगा
मांदल की थाप
दुखों को रौंदते घुंघरूओं की थिरकन
चाँदनी बिखेरती
सदियों पुरानी रागिनियों का रसपान करती
रात की ढलान

दूर-दूर पहाड़ियों पर
मेमनों के लिए बची-खुची
घास का अहसास कराती हरियाली
दुनिया को जगमगाते ओस
मौमाखियों के छत्ते
डगाल पर आँधियों से बचे
लटकते घोंसले में चूजों को
दाना चुगाती बया

खेत पर रतजगे के अलाव के लिए
हरखू की चकमक
ऐपन ढारती नई बहू

अपने हिस्से के काम जैसे
पुरखों की वाचिक परम्परा में कोई आत्मकथा

कुछ सँभले या न सँभले
कुछ बचे या न बचे
टूटता-बिखरता ढाई आखर जरूर सम्हले
धूप-छाँही रंग में
संभाल रखना ही है

फिर-फिर उजड़ने के बाद भी
बसती हुई दुनिया को

डैने

आँधी-तूफान उठा दूर कहीं
घिरी दिशाएँ
उखड़ने-उजड़ने के बावजूद
रह गया सिहरता एक पेड़

कुछ कहने को
कहने को बची रह गई जो भयभीत चिड़िया
बचा भी क्या है उसके पास
प्रभाती कहने के सिवाय

गा चिड़िया
सबेरा जगा चिड़िया
सूरज उगा चिड़िया

चिड़िया
ओ चिड़िया
डैने फैला ओ चिड़िया

अब जो दिन आएगा

(छत्तीसगढ़ राज्य गठन पर)
सिर्फ एक ही अर्थ होगा
धान की पकी बालियों के झूमने का
आँखों में जाग उठेगी
नदी की मिठास
पर्वतों की छातियों में
उजास और पूरी-पूरी साँस
आम्र-मंजरियों की हुमक से
जाग उठेंगी दिशाएँ

सबसे बड़ी बात होगी
अब जो दिन आएगा
नहीं डूबेगा किसी के इशारे पर
सबसे छोटी बात
रात आएगी सहमी-सी
और चुपके से खिसक जाएगी
आँख तरेरते ही

खुशगवार मौसम

(कर्ज में डूबे हुए किसान के खेत की वापसी को
देखकर)
पुतलियों में उतर आई
प्रसन्ना नदी अलस सुबह
शंख सीपी शैवालों समेत
घंटियों की गूँज
आवृत्त कर रही समूची देह को
यहीं-कहीं जोत रहा है बैशाखू
अभी-अभी मुक्त हुआ खेत
मूँगे-मोती अभी-अभी जो मुक्त कर लाए गए हैं
खींच रहा है हल पूरी ताकत से
अश्रु ढुलक रहे हैं गालों पर
बारिश में छत उखड़ने के बाद भी
हवा को चीरती वह साँवली लड़की
मुस्करा रही है
दिशाओं में भर रही है लाली
मौसम खुशगवार है
आकाश झुक गया है कंधों पर
पूरी मुस्तैदी से वह जोत रहा है खेत

पूरी ताकत से खींच रहे हैं लकीरें
मूँगे और मोती

गोली

गोली की आँखें नहीं होतीं
गोली को सुनाई नहीं देता कुछ भी
गोली नहीं जानती बतियाना
गोली कुछ भी नहीं महसूस सकती
गोली सिर्फ आदमी को मारना जानती है
मृत्युदेवता का अधिकार छीनकर

फिर भी है दुनिया भर की मंडियों में
बेची जा रही है गोली

वे जा रहे हैं

वे सिर्फ उन्मादियों को मारने नहीं जा रहे
वे जा रहे हैं
युद्ध में बेघरबार हुए निर्दोषों को ढांढस बँधाने
जलाए जा रहे खोंदरों को सँवारने
रूठी हुई मैना को मनाने

वे जा रहे हैं बस्तर की मुक्ति के लिए

कोई नहीं है बैठे–ठाले

कोई नहीं है बैठे-ठाले

कीड़े भी सड़े-गले पत्तों को चर रहे हैं
कुछ कोसा बुन रहे हैं

केचुएँ आषाढ़ आने से पहले
उलट-पलट देना चाहते हैं जमीन

वनपांखी भी कूड़ा-करकट को बदल रहा है घोंसले में
भौंरा फूलों से बटोर रहा है मकरंद
और साँप धानकुतरू चूहों की ताक में
काले बादलों के पंजों से किरणों को बचाने की कशमकश
में चाँद

पृथ्वी की सुंदरता में उनका भी कोई योगदान है
इनमें से किसी को नहीं भान
फिर भी वे हैं कि लगे हुए रामधुन में

और इधर
सुंदर पृथ्वी के सपने पर कोरा विमर्श

संबंध

आपको
अपनी यह वसुंधरा माँ नजर आती होगी
माँ नहीं तो मौसी, या काकी
हो सकता हो बहन या भाभी ही सही
यह भी नहीं तो सखी या प्रेयसी या फिर दासी
होगी
कुछ तो होगा आपस में संबंध?

अरे
आपने तो कुछ भी नहीं सोचा-विचारा अब तक

फिर वह किससे कर रही होगी गुहार

रहा जा सकता है वहाँ भी

रहा जा सकता है वहाँ भी
मुकम्मल तौर से
बारी-बारी से खिड़की के पास बैठकर
कुछ भीतर-कुछ बाहर
निहार लिया जाए बारी-बारी से

बारी-बारी से
एक ही चटाई पर लेटकर
सपना देख लिया जाए
बारी-बारी से एक ही थाली में परोसी गई
मकोई की रोटी अरहर की दाल
भात-कढ़ी में ताजी धनिया डाल
खा लिया जाए

बारी-बारी से
कुलदेवता वाली 'मानता पथर' के आगे
हल्दिया चाउल छिड़ककर
समानधर्मी मन्नतें माँग ली जाएँ

बारी-बारी से
बूढ़े पहाड़ जैसे सयाने पिता
हरी-भरी नदी जैसी अनुभवी माँ
की हिदायतें मान ली जाए
तो रहा जा सकता है
अपने पुश्तैनी गाँव से बहुत दूर
किसी भी अचीन्ही, अदयालु, असंवेदित महानगरी में
बुरे समय वाले निर्वासित जीवन के
उन दिनों में
दो या फिर तीन कमरे वाले घर में

यूँ भी
हर इंच जगह में दुनिया हो सकती है
समूची दुनिया में रह नहीं सकता कोई भी
यूँ भी
किसी को ताउम्र एक इंच पर नहीं रहना होता

रहा जा सकता है
वहाँ भी गाँव लौटने के पहले तक
मुकम्मल तौर से

मनोकामना

तालाब का ठहरा हुआ पानी
बहता रहे भीतर-ही-भीतर
और सघन हों पहाड़ियाँ

उगे कुछ अधिक टहनियाँ
टहनियों पर कुछ और कोंपलें फूटें
उससे ज्यादा फूल
फूल से ज्यादा फल

उमड़ पड़ें रंग-बिरंगी तितलियाँ
हवा कुछ कदम और चलकर आ सके
खिड़कियाँ खुली हुई हों इससे अधिक
सपनों के और करीब हो आँखें

मुस्कानों में निश्छलता का अंश बढ़ता रहे
कोने अंतरे के रूदन से दहल उठे ब्रह्मांड
तारों को मुस्काता चेहरा दिखला रहे
चाँद कुछ ज्यादा ही बन पड़े सुन्दर
इसी तरह दीप्तिवान सूरज भी

हम सभी को कहा जा सके
अधिक सुन्दर अधिक प्रखर
इस समय सबसे ज्यादा जरूरी है
मनोकामनाओं की आयु और बढ़े
बढ़ता ही रहे

तो

कुछ देर तो साथ चलो
कि वह बिल्कुल अकेला न समझे

कुछ तो बतियाओ
कि वह निहायत अबोला न रह जाए

कुछ तो भीतर की सुनो
कि वह बाहर-ही-बाहर न मर जाए

कुछ तो देखो
कि वह दुर्दिन से न डर जाए

कुछ भी नहीं कर सकते तो
इस पृथ्वी में होने का मतलब क्या है

खाली समय

खाली समय में
काँट-छाँट लेते हैं नाखून

कोने-अंतरे से झाड़-बुहार लेते हैं मकड़ी के जाले
आँगन की आधी धूप आधी छाँह में औंधे पड़े
आँखों में भर लेते हैं आकाश
लोहार से धार कराकर ले आते हैं पउसूल

इमली या नींबू से माँज लेते हैं
पूर्वजों के रखे हुए तांबे के सिक्के
जगन्नाथपुरी की तीर्थयात्रा में मिले
बातूनी गाइड को कर लेते हैं मन भर याद

छू लेना चाहते हैं कोसाबाड़ी के
सभी साजावृक्षों और उसमें सजे-धजे
कोसाफल को मनभर
जैसे काले बादल

टूट चुकी नदी को

सौंप देते हैं मुस्कराहट

खाली समय भर-भर देता है हमें
वैसे ही लबालब

देखते ही देखते एक हत्या हो जाती है

हत्यारे बहुत चालाक हो चुके हैं
वे नहीं चलाते चाकू या खंजर
नहीं पालते गुंडे
उनके पास होते हैं जहरीले शब्द
खतरनाक भाषा
जानलेवा बिम्ब
और उसे सारी बस्तियों तक फैलानेवाले दुभाषिये
मनुष्य शुरू-शुरू में बेचैन हो उठता है
कुछ-कुछ जूझता भी है
फिर धीरे-धीरे मौन, अंत में गूंगा
और एक दिन काठ में तब्दील हो जाता है

देखते ही देखते एक हत्या हो जाती है

अब
हत्यारे को कुछ भी नहीं करना पड़ता
हम सब ही उसे आत्महत्या घोषित कर देते हैं।

तोते को किसने किया विवश

तोते को किसने किया विवश
आत्महत्या के लिए
सारे पक्षी जानते हैं
झुरमुट की आड़ में
रचे गए षड़यंत्र की कानाफूसी
सबने सुनी है

तोते के चेहरे पर पसरा
अंतर्द्वंद्व
सबने देखा है

कहाँ पड़े हैं कटे हुए पंख
किस सरोवर में धोए गए हथियार
सबको पता है

जंगल में कभी नहीं उभरेगी
मनुष्य की आवाज
सभी को दुख है

सबके सब सिर झुकाए बैठे हैं
सबके सब कबसे मरे पड़े हैं

यह तो बूझें

तुमने हमारे मंदिर ढहाए
हमने तुम्हारे मस्जिद
शायद तुम अंधे हो गए थे
और हम भी
चलो, गल्तियाँ दोनों से हुईं
इंसान थे....

पर यह तो बूझें
आखिर क्यों
न तुम्हें रोका पैगम्बर ने
न हमें राम ने समझाया

तालिबान

कोई दलील नहीं
कोई अपील नहीं
कोई गवाह नहीं
कोई वकील नहीं
वहाँ सिर्फ मौत है

कोई इंसान नहीं
कोई ईमान नहीं
कोई पहचान नहीं
कोई विहान नहीं
वहाँ सिर्फ मौत है

वहाँ सिर्फ मौत है
वहाँ सिर्फ धर्म है
धर्म को मानिए
या फिर
बेमौत मरिए

लोक

एक सीधी-सादी
जानी-पहचानी नदी
रंग-रूप-तासीर में अभिन्न
न बारिश में डराती
न तपन में जलाती
पोर-पोर में बहती रहती है हरदम
अपने पारदर्शी जल के साथ

कमरे से कुछ भी नहीं दिखता

इसी कमरे से देखना है उसे
लुटे-पिटे लोग
थके-हारे पाँव
डबडबाई आँखें
मुरझाए चेहरे

जबकि खिड़कियों के उस पार
सिर्फ दीवालें हैं कमरे को घेरे
और दृष्टि के ओर-छोर
अपारदर्शी रंगीन सलाहें
एक बड़ा टेलिस्कोप
और दुनिया के दो-चार
प्रत्यक्षदर्शी विशेषज्ञ भी

वह चाहे तो
खेंच सकता है दुनिया का चित्र
बैठे-बैठे यहीं से

वह कमरे को

रद्दी कागज की मानिंद
डस्टबिन में फेंककर
भटकता रहता है
इधर-से-उधर

कमरे से कुछ भी नहीं दिखता
जिसे कमरे से देखा जाना है

प्यार में

पृथ्वी हँस रही है
आकाश झूम रहा है
हवा गमक रही है
आग जाग रही है
पानी गा रहा है

वर्षों पहले बिछुड़े हुए
उन दोनों की तस्वीरें
एक दूसरे की आँखों में उभरने के बाद

तरकीब

भाला-बरछी रखना भूल गए
अब यहाँ
पत्थर भी मयस्सर नहीं
कोई बात नहीं
कंकड़ ही संकेल कर
पोटली में बाँध लो
इससे पहले कि और नजदीक आए
जोर-जोर से गोल-गोल घुमाते रहो
देखना
जानवर भाग खड़ा होगा

जिन्होंने नहीं लिखा कभी कोई प्रेमपत्रा

नहीं जान सकते
निष्कलुष शब्दों की सात्विकता
गरीब पोस्टमैन के आगमन का प्रिय संगीत
ढलती रात बादलों के बीच लुकाछिपी खेलते चाँद का सौंदर्य
अनमोल दस्तावेज को दुश्मनों की नजरों से छुपाने की कला
दुनिया को सजाने-सँवारने की कोशिश
बिल्कुल नहीं जान सकते वो
जिन्होंने नहीं लिखा कभी कोई प्रेमपत्र

जिन्होंने नहीं लिखा कभी कोई प्रेमपत्र
वे नहीं लिख सकते कविता

प्रेमपत्रा

जब न प्रेमी होंगे
न प्रेमिका
और न ही प्रेम
तब भी मौजूद होंगे दोनों
और उनका प्रेम
इन पीले पड़ चुके कागज में

अच्छे समय के दस्तावेज की तरह

अन्न–पूजा

जो खेत नहीं जोत सकते
जो बीज नहीं बो सकते
जो रतजगा नहीं कर सकते
जो खलिहान की उदासी नहीं देख सकते
उनकी थालियों के इर्द-गिर्द
अगर
महक रहा है अन्न
तो यह
उनकी चुकाई कीमत की बदौलत नहीं
सिर्फ एक उसकी कृपा है
जो अन्न की पूजा करता है

लोग जरूर थे

लोग जरूर थे
पर उनके हाथ नहीं थे
कंधों पर रखने के लिए सिर्फ कंधे ही थे

सभी ने पहन रखे थे उजले कपड़े
पर रूमाल का वह टुकड़ा न था
जिससे पोंछे जा सकते थे आँसू

सभी तेज दौड़ना चाहते थे
इसलिए कोई न कोई रौंद दिया जाता था

सलामत थे सबके कान
पर बहरी हो जाती थी ऐन वक्त पर

लोग जरूर थे पर मनुष्य कहाँ थे।

आप किधर जाना चाहेंगे?

जब
आपके पास सिर्फ दो ही रास्ते बचे हों
पहला हत्या
दूसरा आत्महत्या का
सच सच बताना
तब
आप किधर जाना चाहेंगे?

श्रद्धांजलि

बेमौत मारे गए मनुष्य को
न फूल-अक्षत की जरूरत होती है
न गंगाजल की
न ही कुरान या गीता पाठ की

एक ही जरूरत होती है
बेमौत मारे गए मनुष्य की
हममें से कोई
हत्यारे का नाम जोर-जोर से चिल्लाए
बहुत जोर से चिल्लाए

जो आत्महत्या नहीं करते

जो आत्महत्या नहीं करते
हो सकता है वे दुनिया से रंचमात्र भी परेशान न हों
हो तो यह भी सकता है कि वे बहुत परेशान हों
हो सकता है कि वे दुनियादारी में बहुत पारंगत हों
यह भी हो सकता है कि वे बहुत व्यावहारिक हों
हो सकता है कि वे पाप-पुण्य न मानते हों

पर यह कतई नहीं हो सकता कि
वे दुनिया से नाराज और दुखी न हों

कुछ लोग सुसाइडल नोट नहीं लिख छोड़ते

कुछ लोग आत्महत्या से पहले
सुसाइडल नोट नहीं लिख छोड़ते
इसलिए नहीं
कि उन्हें लिखना नहीं आता
इसलिए भी नहीं
कि वे सच के साथ नहीं होते
बल्कि इसलिए
कि उन्हें पता होता है
पुलिस बड़ी चाव से जाँच करती है
लोग गवाहियाँ भी देते हैं
दोषी को कटघरे में खड़ा किया जाता है
इधर/ वह जेल की चक्की पीसता है
उधर/ सारी दुनिया में उसकी जगहँसाई होती है

सिर्फ और सिर्फ इसलिए
कि अचानक एक दिन यही दुनिया
फिर किसी को
आत्महत्या के लिए मजबूर कर देती है

सपना

कुछ घास
कुछ झाड़ियाँ
पीठ पर बैठकर गुनगुनानेवाली कुछ चिड़िया
कुछ पोखरियाँ
कुछ छाँवदार पेड़
इससे ज्यादा कुछ भी नहीं
बकरियों के सपनों में

कविता होगी तो

एक निःशस्त्र और निःसहाय आदमी भी
निर्भीक होकर लड़ता रहेगा
खंजर, बंदूक, तोप से
और हर लड़ाई के बाद
और अधिक होंगे भोथरे
खून पीनेवाले औजार
समझ लिए जाते रहेंगे
खतरनाक मंसूबे
मारे जाएँगे
दुनिया को ध्वस्त करनेवाले दैत्य

हर लड़ाई के बाद
सिर्फ मनुष्य बच रहेगा
मनुष्य के कुछ स्वप्न होंगे
जिसमें होगी अधिक चहचहानेवाली चिड़िया
और चिड़िया के साथ खिलखिलाती सुबह

कविता होगी तो
बची रहेंगी सारी सम्भावनाएँ

बस्तर : कुछ कविताएँ

एक

प्रश्न यह नहीं
वहाँ पहले नक्सली पहुँचे या पुलिस
प्रश्न यही है कि
इन दोनों की वहाँ कभी भी
कोई जरूरत नहीं थी

दो

चाहे मरनेवाला मरे
चाहे बचानेवाला
दोनों स्वर्ग जाएँगे यह तो पता नहीं
पता तो मुझे सिर्फ इतना ही है
हर बार मरनेवाले अपने परिवार के लिए
नर्क छोड़ जाएँगे

तीन

जरा कान लगाकर सुनिए

सुबक-सुबक कर रो रहे हैं
नदिया, जंगल, पहाड़, चिड़िया
और पेड़ की आड़ में आदिवासी

इन सबके बीच
झूम-झूम कर गा रहा है क्रांतिकारी
यह तो यूँ ही सुनाई दे रहा है

चार

वो
पहले मरहम-पट्टी करेंगे
आप उन्हें अपने दिल में बसा लेंगे
फिर धीरे-धीरे आप बिल्कुल
उनकी तरह चीजों को देखने लगेंगे
सपनों के लिए आप
कुछ दिन बाद
बम-बारूद से भी खेलने से नहीं हिचकिचाएँ
वह दिन भी आएगा
जब आप दोनों तरफ से घिरे होंगे
गोली कहीं से भी चले
मारे सिर्फ आप ही जाएँगे

पाँच

दाईं ओर का कामरेड मार दिया जाए
या बाईं ओर का कमांडो
कुछ देर बाद

सबकुछ यथावत् हो उठता है यहाँ
सिर्फ धरती की सिसकियाँ गूँजती रहती हैं

तब तक

जिन्हें अभी डराया नहीं गया है
जिन्हें अभी धमकाया नहीं गया है
जिन्हें अभी सताया नहीं गया है
जिन्हें अभी लूटा नहीं जा सका है
क्या वे सारे के सारे निरापद हैं?
कभी भी घेरा जा सकता है
उन्हें
हो सकता है उनकी हत्या ही कर दी जाए
तब तक क्या बहुत देरी नहीं हो चुकी होगी?

जब कभी होगा जिक्र मेरा

याद आएगा
पीठ पर छुरा घोंपनेवाले मित्रों के लिए
बटोरता रहा प्रार्थनाओं के फूल कोई
मन में ताउम्र

याद आएगा
बस्ती की हारी हुई हर बाजी को
जीतने की कशमकश में ही
मारा गया बिल्कुल निहत्था कोई
भाग खड़ी हुई चिर-परिचित परछाइयों की सांत्वना के साथ

याद आएगा
कोई जैसे
लम्बे समय की अनावृष्टि के बाद की बूंदाबांदी
संतप्त खेतों में, नदी पहाड़ों में, हवाओं में
कि नम हो गई गर्म हवा
कि विनम्र हो उठा महादेव पहाड़ रस से सराबोर
कि हँस उठी नदी डोंडकी खिल-खिलाकर

कि छपने लगी मुक्त कविता
सुबह दुपहर शाम छंदों में

याद आएगा
कोई
जिक्र जिसका हो रहा होगा
वह बन चुका होगा वनस्पति
जिसकी हरीतिमा में तुम खड़े हो
बन चुका है आकाश की गहराइयाँ
जिसमें तुम धँसे हो

याद आएगा
कोई टिमटिमाता हुआ
लोककथाओं की पूर्वज तारा की तरह
अँधेरों के खिलाफ रातों में अब भी

जब कभी होगा जिक्र मेरा
याद आएगा
छटपटाता हुआ वह स्वप्न बरबस
आँखों की बेसुध पुतलियों में

सबसे अच्छी परजा

जो राजा की पालकी
नहीं ढोती
जो राजा के जूतों का गीत
नहीं गुनगुनाती
जो राजा की मुद्राएँ देखकर
चेहरे की बानी नहीं बदलती
जो राजा के यश के लिए
फक्क सुफैद शब्द नहीं जुटाती
अच्छी परजा होती है वह भी

सबसे अच्छी परजा के लिए होता है देशनिकाला
राजा के राजपत्र में
सबसे अच्छी परजा राज करती है
सारे परजा के मन में।

लोग मिलते गए काफिला बढ़ता गया

अनदेखे ठिकाने के लिए
डेरा उसालकर जाने से पहले
समेटना है कुछ झूमते गाते
आदिवासी पेड़
पेड़ की समुद्री छाँव
छाँव में सुस्ताते
कुछ अपने जैसे ही लोग
लोगों की उजली आँखें
आँखों में गाढ़ी नींद
नींद में मीठे सपने
सपनों में, सफर में
जुड़ते हुए कुछ रोचक लोग

मनौती

पकने लगते हैं जब अमरूद
बाड़ी नहीं
घर नहीं
मोहल्ला नहीं
समूचा गाँव
एकबारगी महक उठता है
मीठी और एक जरूरी गंध से

महिलाएँ मनबोधी फल को
लाख न चाहते हुए भी
शहर में छोड़ आती हैं
नोन, तेल, साबुन के लिए

पकने लगते हैं जब अमरूद
चिड़ियों की दुनिया
उतर आती है इधर ही
बच्चों के गमछे में भर-भर जाता है
सुबह
शाम

दोपहर का नाश्ता सब कुछ

माँएँ सिलाती है अमरूद
बड़े भोर से जागते ही
ऐसे वक्त
वे कोसती भी हैं चिड़ियों को
ठीक अपने औलाद की तरह
वैसे भी
बच्चे और चिड़िया पर्याय हैं परस्पर
अमरूद के पेड़ से चिपके रहते हैं
आखिर दोनों
एक दिन भर रात भर दूसरा

पिता अमरूद तोड़ते वक्त
मनौती माँगते हैं रोज
एक भी पेड़ अमरूद का
सूख न पाए और पकने का मौसम
हरा रहे पूरे बारहमास

पता नहीं
मनौती
कब पूरी होगी

वजन

धरती का वैभव ऊँचाई आकाश की
सूरज की चमक या हो
चंदा की चाँदनी
पूरी भलमनसाहत
सारा-का-सारा पुण्य
समूची पृथ्वी
पलड़े में चाहे रख दो सावजी
डोलेगा नहीं कांटा
रत्तीभर
किसी ने रख दिया है चुपके से
रत्तीभर प्रेम दूसरे पलड़े में

अभिसार

वे मिलेंगे ही
रोक नहीं सकती
दहाड़ती नदी भूखी शेरनी-सी
उलझा नहीं सकते
जादुई और तिलिस्मी जंगल
झुका नहीं सकते
रसातल को छूती खाई
आकाश में ऊपर उठाते पहाड़
पथभ्रष्ट देवताओं के मायावी कूट
अकारण बुनी गई वर्जनाएँ
समुद्री मछुआरों की जाल-सी
दसों दिशाओं को घेरती प्रलंयकारी लपटें
अभिसार के रास्ते में
नतमस्तक खड़ा हो जाता है कायनात उसकी
स्वयं पुष्पांजलि लिए

मिलना होगा जब-जब उन्हें
वे मिलेंगे ही

कहीं कुछ हो गया है

(एक जवान मजदूर की अकाल मृत्यु पर)

जस का तस
चिड़ियों के झुरमुट से बोल उठना
बूढ़ी औरतों का झुलझुलहा स्नान
प्रभाती की लय में गाँव
छानी-छानी मुस्कराहट सूरुजनारायण की
आँगन बुहारती बेटियों का उल्लास
बछिया को बीच-बीच पिलाकर गोरस निथारना
दिशाओं में उस पार तक
उपस्थित होती घंटी-घड़ियाल की गूँज
पानखाई तराई में बूँद-बूँद जलसमेटती
पनिहारिनों में 'रात्रि कथावाचन'
अजीब-सी उदासी है सबके भीतर
फिर भी/ कहीं कुछ हो गया है
लोग फफक-फफक कर बताते हैं
पूछने पर
एक भलामानुस
माटी के लिए दिन-रात खटता था जो
माटी में खो गया यक-ब-यक

निकल आ

सुरागों की पथरीली गंध से किरणें
अक्सर हो जाती हैं उदास
फिर फैलाती हैं चहुँदिशि
नैश अंधकार

प्रकाशित नहीं कर पाती बाहर की दुनिया
कि ठीक-ठाक देखा जा सके भीतर तक

ऐसे में कई बार खतरा होता है
अन-अस्तित्व होने का

ओ सशंकित मन
निकल आ बाहर
इधर
अपने गुहा से

यहाँ सूरज की पुतलियों में उभर रहा है
समूचा ब्राह्मंड समूची पृथ्वी
एक-एक ग्रह, नक्षत्र, उल्का पिंड

नीलिमा का विस्तार

इनमें कलरव है कोलाहल है
और कुतूहल भी कम नहीं

सफर में

पाँव धरते ही गिर सकते हैं
सूखती हुई नदी के टूटते कगार से
काई जमी चट्टान है अतीत
दूर बहुत दूर है
दूसरे तट पर भविष्य
सबसे आसान है पहुँचने के लिए
वहाँ तक
चट्टानों को रगड़ती तेज धार में
धीरे-धीरे कदम रखना
तिरछा
ति
र
छा

कविता, पत्थर और पानी

ज्यादा दिन हुए नहीं
कविता में होता था गाँव
और गाँव में जलाशय
बरगद के नीचे पत्थर

पत्थर के लिए भी उलीचा जाता था पानी
पत्थर ऐसा
जो सारा-का-सारा पानी लौटा देता था
अपनी मजबूती का रंग सौंपकर

शायद पत्थर और पानी की बदौलत
समूचा गाँव प्रसन्न था
और कविता भी
चाहे आप किसी भी कोण से देखें

क्या कविता अब भी है
जहाँ पत्थर दबा पड़ा है चंद शब्दों के पैरों के तले
और निर्जीव शिल्प में बंदी है पानी

कुदाल का गीत

(केदारनाथ सिंह की कविता पढ़कर)
जितनी मुकम्मिल होती है
धान-कोठी की जगह
जगह माँ-बाबू के साथ हमारे विश्राम की
जगह चौके की
उतनी ही वैसी ही मुकम्मिल
कुदाल की
ठीक तुलसी चौरे के बाजू से
दीया तुलसी को दिखाया जाए
तो खुद-ब-खुद कुदाल चमक उठे

घर से जब भी कोई
निकलता है दुनिया में
एक वही है जो
खेंचती है ध्यान अपनी ओर
जैसे वह कहती हो
उसे देखकर निकलता शगुन होता है

वह जागती रहती है

बाबूजी के सोने से पहले तक
जब-तब उसके सपने में आ जाते हैं
बाबूजी दुख-सुख पूछने
और उधर बाबूजी भी हैं कि
अपने हर सपने में उसे साथ टुकुर-टुकुर निहारते पाते हैं

वह बीज को प्रतिष्ठित करता है ऐसी जगह
जहाँ से सबके उदर तक पहुँचाना
होता है निहायत सरल

एक वही तो है
जिस पर सेंदूर-फूल-अक्षत चढ़ाते वक्त
बाबूजी के साथ घर के चेहरे पर
उभर आती है सारी
समूची आश्वस्ति

कुदाल सिर्फ लोहा नहीं औजार भी है

गाना ही गाते रहेंगे

(लोककथा की याद)

नदी किनारे गाती-गुनगुनाती
चिड़िया एक हों आप
दिखे एकाएक चींटी एक आकुल-व्याकुल
धार हो इतनी बेमुरौव्वत कि
चींटी हो जाए बार-बार असहाय
ऐसे में गाना ही गाते रहेंगे
या छोटी-सी डाल तोड़कर गिराएँगे?

झाड़ू

बेर उठते ही ढूँढते हैं सब मुझे
मैं किसी कोने-अंतरे में
अकेला उदास पड़ा झाड़ू

हवाएँ चिढ़ाती हैं मुझे
कूड़ा-करकट बिखेरकर
चिड़िया भी
सभ्य मालिक के गंदे बच्चों की तरह

मुझे छूती तक नहीं मालकिनें
बहुत बौनी मेरी औकात
दाढ़ में माँस फँसने पर
एक मैं ही टूटने-लुटने को विवश
लेकिन जब कभी
गरीब बस्ती की लड़कियाँ उठा लेती हैं कंधों पर
इत्मीनान से बैठकर देख सकता हूँ
फक्क सफेद कपड़ा धारे शहरियों की गंदगी

अक्सर अँधेरे में चटक उठता है काँच

चुभने की आशंका से आतंकित
हर कोई मुझे घोषित कर देता है सबसे जरूरी
फिर सबकुछ जस के तस

तुम्हें क्या पता
सफाई करते हुए मुझे
मिलती होंगी कितनी मजेदार और खोई हुई चीजें

बुद्धिजीवी अक्सर याद करते हैं
मुक्तिबोध के बहाने मुझे
और मेरे साथ उस मेहत्तर को
जो अभी भी बहुत दूर खड़ा हँस रहा है
उन्हीं पर

गिरूँगा तो उठूँगा

अपने नितांत अकेले में भी
सदियों को समेटे
हर वक्त मुस्तैद
फिर से अँखुआने
घुप्प अँधेरे को चीरकर

विश्वास इतना
कि पत्थरों पर उग जाऊँ
छप्पर-छानी से झिलमिलाऊँ
डर ऐसा
कि खुद को बचाता रहूँ घुन से
चिन्ता बस यही
कि पकूँ तो गोदाम नहीं खलिहान से सीधे घर लिवाऊँ
चाहत सिर्फ इत्ती-सी
कि बची रहूँ निखालिस और ठोस
आत्मविसर्जित दुनिया में
थोड़ी-सी नमी और
थोड़ी-सी गर्माहट के सहारे

मामूली चीज हूँ
बहा ले जाती है बारिश की छोटी-सी धार
उजाड़ देता है बतास घर-परिवार
चुग लेता है पिद्दी भर टिड्डा

इतना मामूली भी नहीं
जैसे तुम्हारे जेब का सिक्का
रह जाऊँ एक बार खनक कर
गिरूँगा तो उठूँगा हर बार पेड़ बनकर
बढ़ूँगा तो बाटूँगा छाँव सबको

आम आदमी का सामान्य ज्ञान

आम आदमी का सामान्य ज्ञान
नहीं होता असाधारण

आम आदमी नहीं जानता
सोना-खदान का भूगोल
काले को फक्क सफेद बनानेवाला रसायन
नाती-छंती तक के लिए बटोर लेने का अर्थशास्त्र
ज्ञान का इतना पक्का
हराम की हर चीजों का नाम जीभ पर रखा

आम आदमी नहीं जानता
झूठ को सच या सच को झूठ की तरह दिखाने की कला
चरित्र सत्यापन की राजनीति
धोखा, लूट, और षड़यंत्र का समाज-विज्ञान
ज्ञान इतना पक्का
पहचान लेता है स्वर्ग-नरक की सरहदें

आम आदमी नहीं जानता
हँसते, मटकते, चहकते हुए चेहरों का बाजारभाव

बाजार में 'वन बाय वन फ्री' का रहस्य
गैरों की हाथ-घड़ी देखकर अपने समय का मिलान
ज्ञान इतना पक्का
बूझ लेता जरूरी और गैरजरूरी का फर्क

आम आदमी नहीं जानता
तानाशाहों की रखैलों, जूतों, कपड़ों, इत्रों का बीजगणित
ईश्वर के सम्मुख रखे चढ़ावा-पेटियों में लगातार वृद्धि की तकनीक
दुख, संत्रास, तिरस्कार, आत्महत्या के पीछे की भौतिकी
ज्ञान इतना पक्का
कि भगवान भी बगलें झाँके

आम आदमी नहीं जानता बहुत कुछ
तो मत जाने
आप कौन होते हैं
उसे पास-फेल करने वाले

निहायत छोटा आदमी

उतना दुखी नहीं होता
निहायत छोटा आदमी
जितना दिखता है

निहायत छोटा आदमी
छोटी-छोटी चीजों से संभाल लेता है जिंदगी
नाक फटने पर मिल भर जाए गोबर
बुखार में तुलसी डली चाय
मधुमक्खी काटने पर हल्दी

जितना दिखता है
उतना कांइयाँ नहीं होता
निहायत छोटा आदमी

निहायत छोटा आदमी
नई सब्जी का स्वाद पड़ोस बाँट आता है
उठ खड़ा होता है मामूली हाँक पर
औरों के बोल पर जी भर के नाचता

जितना दिखता है
उतना पिछड़ा नहीं होता
निहायत छोटा आदमी

निहायत छोटा आदमी
सिरहाने रखता है पुरखों का इतिहास
बूझता है अपना सारा भूगोल
पत्ती पर ओस, जंगल के रास्ते, चिड़ियों का दर्द
पढ़े बगैर बड़ी-बड़ी पोथी

जितना दिखता है
उतना छोटा नहीं होता
निहायत छोटा आदमी

निहायत छोटा आदमी
लहुलूहान पाँवों से भी नाप लेता है अपना रास्ता
निहायत छोटा आदमी के निहायत छोटे होते हैं पाँव
पर डग भरता है बड़े बड़े

जहाँ जाता नहीं कोई

जानेवाले हम ही होंगे
जहाँ जाता नहीं कोई

जलते दोपहर में अकेले खड़े पेड़ों के घर
जीर्ण-शीर्ण पत्तों के करीब
झुरमुट में डरे-दुबके खरगोश तक

फुर्सत निकालकर अपनी कमीनगी पर हँसने
थोड़ा-सा रोने, थोड़ा पछताने
रूठे हुए दोस्त को मनाने
पानी-सा बहते चले जायेंगे

बिलम नहीं जाएँगे
अपनी ऐंठन की छाँह में
मार कर आँखों पर पानी के छीटें
फिर चल ही देंगे
जहाँ नहीं जाता कोई

बचे रहेंगे

नहीं चले जाएँगे समूचे
बचे रहेंगे कहीं न कहीं

बची रहती हैं दो-चार बालियाँ
पूरी फसल कट जाने के बावजूद
भारी-भरकम चट्टान के नीचे
बची होती हैं चींटियाँ
बचे रहेंगे ठीक उसी तरह

सूखे के बाद भी
रेत के गर्भ में थोड़ी-सी नमी
अटाटूट अँधियारेवाले जंगल में
आदिवासी के चकमक में आग

लकड़ी की ऐंठन कोयले में
टूटी हुई पत्तियों में पेड़ का पता
पंखों पर घायल चिड़ियों की कशमकश
मार डाले गए प्रेमियों के सपने खत में
बचा ही रह जाता है

बचे रहेंगे ठीक उसी तरह

बच नहीं पाए
फिर भी बचे रहेंगे
अनसुने शब्द हवा में स्पन्दित

❑❑